



‘00000000 00000000’क प्रकाशन वगित 3 वर्षो से हो रहा है। अब इसे नियमति रूप से मासिकप्रकाशन करते हु देश केकेने-केने में बस रहे गोडवाड़-मारवाड़ केमहानुभावों तकइस पत्रकि के पहुंचाया जा रहा है। समय की जरूरतों तथा आज की नौजवान पीढ़ी व संरक्षण केप्रतिसाहित्यिक, ऐतहासिक, धार्मिकके अनुसार हम पत्रकि के सुपठनीय व लोकेपयोगी बनाने केला प्रयासरत है। इसमें आपकी सक्रिय रूप से सहभागता की वनिमूर अपेक्षा है।

गोडवाड़ वरिसत केवल पत्रकि मात्र नहीं है, यह गोडवाड़ की सांस्कृतिक, ऐतहासिक, धार्मिकसंवाहकअग्रदूत भी है। इस साहित्य प्रबोधन अभयान में आपका सहभाग अभीष्ट है। कृपया इस वरिसत से जुड़े वं औरों के भी जोड़े।

000000000000
00.000000000 000000
000000 00000000 (‘00000000 0000000’)